

**विवादेषणा स्त्री.** (तत्.) विवाद की अभिलाषा, विवाद की इच्छा।

**विवादय वि.** (तत्.) जिस विषय, वस्तु अथवा सिद्धांत को लेकर विवाद हो अथवा विवाद की संभावना हो।

**विवाह पुं.** (तत्.) शादी, परिणय, एक शास्त्रीय प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दांपत्य-सूत्र में आबद्ध होते हैं, विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं- आर्ष, ब्राह्म, दैव, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच।

**विवाहविच्छेद पुं.** (तत्.) स्त्री-पुरुष के दांपत्य संबंध को तोड़ने/विच्छेद/विच्छिन्न करने की क्रिया, तलाक।

**विवाहित वि.** (तत्.) वह जिसका विवाह हो चुका हो, ब्याहा हुआ।

**विवाही वि.** (तत्.) विवाहिता, ब्याही हुई।

**विवाहोच्छेद पुं.** (तत्.) विवाह-विच्छेद, तलाक, पति-पत्नी का विवाह संबंध तोड़ना/टूटना विधि. न्यायिक निर्णय के माध्यम से विवाह की अमान्यता की घोषणा।

**विवाहय वि.** (तत्.) विवाह करने योग्य, विवाह द्वारा संबद्ध पुं. वर, दामाद, जामाता।

**विविक्त वि.** (तत्.) 1. किसी से अलग किया हुआ, पृथक्, वियुक्त, पृथक्कृत 2. अकेला, एकाकी, निवृत्त, विलग्न 3. स्वच्छ, पवित्र, स्पष्ट 4. विवेकी, प्रगाढ़ पुं. एकांत स्थान, एकाकीपन।

**विविक्ता स्त्री.** (तत्.) वह स्त्री जो अपने पति को प्यारी न हो, अभागी स्त्री, बदकिस्मत औरत।

**विविचर वि.** (तत्.) विवेकहीन, आचारहीन, विचारशून्य।

**विविध वि.** (तत्.) बहुत प्रकार का, भाँति-भाँति का, अनेक तरह का, विभिन्न प्रकार का पुं. विभिन्न प्रकार के काम।

**विविधवर्णी वि.** (तत्.) नाना प्रकार का, विविध प्रकार का, अनेक रंगों वाला, बहुरंगी।

**विविर पुं.** (तत्.) गुफा, खोह, बिल, दरारा।

**विवृत वि.** (तत्.) 1. अनावृत करके (खोलकर) सामने रखा हुआ, घोषित, प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2. भाष्य किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ।

**विवृत द्वार वि.** (तत्.) खुले दरवाजे वाला।

**विवृताक्ष वि.** (तत्.) 1. सुदीर्घ नेत्रों वाला, सुंदर नेत्रों वाला 2. खुली आँखों वाला।

**विवृति स्त्री.** (तत्.) 1. किसी वस्तु का प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2. विस्तार 3. अनावरण, व्यक्तीकरण 4. (पुस्तक का) भाष्य, टीका, वाच्यांतर 5. वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर स्पष्टीकरण के रूप में हो भाषा. विवृत स्वर के बोलने में मुख के अधिक खुलने और जीभ के नीचे रहने की क्रिया।

**विवृतिभीति स्त्री.** (तत्.) मनो. एक ऐसा रोग जिसमें रोगी किसी उत्तेजक अथवा अत्यधिक प्रकटीकृत वस्तु के प्रति आधारहीन अथवा अर्थहीन भय या तीव्र घृणा या अरुचि से ग्रस्त रहता है।

**विवृतोक्ति स्त्री.** (तत्.) काव्य. एक अलंकार जिसमें पहले तो कोई रहस्यपूर्ण बात श्लिष्ट शब्दों में कही जाती है पर अंत में किसी कथन या क्रिया के द्वारा वह बात स्पष्ट कर दी जाती है।

**विवृत्त वि.** (तत्.) 1. घूमता हुआ 2. लौटा हुआ, परावृत्त 3. खुला हुआ।

**विवृत्ति स्त्री.** (तत्.) 1. घूमना, चक्कर खाना 2. लौटना, वापस आना 3. प्रसंग 4. शब्दों के जिन वर्गों में नियमतः संधि होनी चाहिए उसका न होना।

**विवेक पुं.** (तत्.) 1. मिली-जुली वस्तुओं को अलग-अलग करने की शक्ति 2. निर्णय करने की शक्ति, बुद्धिमत्ता 3. मन की वह आंतरिक शक्ति जिससे भले-बुरे का ठीक और स्पष्ट ज्ञान होता है 4. सत्य और असत्य को अलग करने की शक्ति।